International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 03(II), July - September, 2024, pp. 41-46

मध्यप्रदेश के धार जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों की संभावनाएं एवं चुनौतियाँः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. भारतसिंह गोयल*
नरसिंह भिड़े**

सार

भारत में प्राचीन काल से उद्योग विकसित किये गये जिसके अंतर्गत कृषि पर आधारित उद्योग भी रहे। कुछ वर्षों के बाद अंग्रेजी शासन काल में बड़े–बड़े उद्योग जैसे चाय, काफी, जूट एवं नील इत्यादि की कोठियों के उद्योग अंग्रेजी कम्पनियों द्वारा शुरू किये गये। 19वीं सदी के अंत में भारत में वस्त्र, जूट के उद्योगों को स्थापित किया गया। कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों का भारत की औद्योगिक संरचना में महत्वपूर्ण भाग है। इन उद्योगों का सकल घरेलू आय, निर्यात आय एवं भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान रहा। म.प्र. औद्योगिक विकास निवेश एवं आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है। भारत में इन उद्योगों से करोड़ों लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ है। भारत की आर्थिक, सामाजिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों में प्रगति हुई। इन उद्योगों का उच्च स्थान स्वतंत्रता के पश्चात प्रत्येक योजनाकाल में हुआ। सरकार ने 1991 में एवं इसके बाद उद्योगों के विकास के लिए अनेक नीतियां एवं प्रयास किये। इन उद्योगों की प्रतिस्पर्धा बड़े उद्योगों की तुलना में तीव्र हुई। परिवर्तन उदारवादी एवं प्रतिस्पर्धात्मक आर्थिक माहौल में इन उद्योगों हेतु कृषि विकास पर अधिक बल दिया गया जिससे कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों के विकास में तीव्रता मिली। इन उद्योगों में प्रायः शक्ति परिचालित मशीनों और आधुनिक उत्पादन विधियों का उपयोग किया जाता है। ये उद्योग व्यापक बाजार की मांग की पूर्ति करते हैं। अतः प्रस्तुत शोध पत्र में धार जिले के कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों की संभावनाएं क्या हैं और उनमें आने वाली चुनौतियों का अध्ययन किया गया है। अतः इनका प्रस्तुत शोध पत्र में समस्या एवं समाधान के निष्कार्ष निकाले गये हैं।

शब्दकोशः *अर्थव्यवस्था, प्रतिस्पर्धा, निवेश, योजनाकाल, रोजगार, औद्योगिक, संरचना।*

प्रस्तावना

भारत में किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास एवं औद्योगिक विकास में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इन उद्योगों का विकास प्राचीन काल से रहा। देश में 19वीं सदी के अंत में अनेक कृषि आधारित उद्योग स्थापित किये गये। अतः कृषि आधारित उद्योग भारत की औद्योगिक संरचना का महत्वपूर्ण भाग है। मध्यप्रदेश में औद्योगीकरण दूसरी पंचवर्षीय योजनाकाल में शुरू किया गया था। इन उद्योगों से

* प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक, वाणिज्य विभाग, शासकीय कन्या महाविद्यालय देवास, मध्यप्रदेश।
** शोधार्थी, वाणिज्य अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्यप्रदेश।

निर्यात से आय, सकल घरेलू आय एवं भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदान रहा है। मध्य प्रदेश का धार जिला खाद्यान्न और व्यावसायिक फसल का उत्पादन करता है। जो कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों के लिए कच्चे माल के तहत है। यह उद्योग श्रम प्रधान उद्योग है। जो बड़े पैमाने पर लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं। ये उद्योग कार्यरत् व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति में सुधार के साथ–साथ अपनी आय में वृद्धि करते हैं। सामान्यतः लघु उद्योग का विभाजन वृहत, मध्यम एवं लघु उद्योग में किया जाता है। इन उद्योगों का विभाजन निर्धारित निवेश की मात्रा पर किया गया है। कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग में प्रायः शक्ति परिचालित मशीनों और आधुनिक उत्पादन विधियों का प्रयोग किया जाता है। जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग व्याापक बाजार की मांग की पूर्ति करते हैं। ये उद्योग उद्यमिता में वृद्धि को तेज एवं अर्थव्यवस्था को विकेन्द्रीकरण की गति प्रदान करते हैं। अतः धार जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण सहयोग देने में समर्थ हैं।

साहित्य पुनरावलोकन

साहित्य पुनरावलोकन में शोधपत्रों, पुस्तकों एवं रिपोर्टों का अध्ययन किया गया है।

डॉ. आर.एन. शर्मा एवं दिनेश कुमार साहू (2021) – ''जालोर जिले में कृषि आधारित उद्योगों की समस्याएं एवं समाधान'' इस शोधपत्र के अध्ययन से यह पाया गया है कि इन उद्योगों में विभिन्न समस्याएं रहीं हैं जिससे विकास के पथ पर बाधक हैं। इनके समाधान हेतु महत्वपूर्ण कदम उठाकर विभिन्न योजनाओं के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया जा सकता है।

डॉ. सुषमा चौधरी (2023) – ''जबलपुर जिले के कृषि आधारित उद्योगों की समस्याएं एवं सम्भावनाओं का अध्यनयन'' इस शोधपत्र में बताया गया है कि सामान्यतः कम पूंजी की आवश्यकता होती है। इसमें कृषि सामान, वित्त एवं सामग्री आदि समस्याओं का अध्ययन किया गया। जो सत्य पाया गया। इन उद्योगों में प्रसंस्करण इकाइयां एवं कृषि मशीनीकरण के सामान भी शामिल किये जाते हैं।

डॉ. अखिलेश कुमार (2020) – ''भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियां'' इस शोध पत्र का अध्ययन करने से एम.एस.एम.ई. क्षेत्र भारत की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियों को देखा गया। इससे यह भी पता लगा कि रोजगार सृजन, निर्धनता, निवारण, क्षेत्रीय विकास, नवोन्मेष और बड़े उद्योगों की तुलना में कम पूंजी लागत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

उद्देश्य

- म.प्र. के धार जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों की सम्भावनाओं का पता करना।
- म.प्र. के धार जिले में कृषि आधारित लघु उद्योगों की चुनौतियां क्या हैं उनका सुझाव देना।
- म.प्र. के धार जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों के विकास में सरकारी प्रयास एवं नीतियों का मूल्यांकन करना।

परिकल्पना

- म.प्र. के धार जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- म.प्र. के धार जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों की संभावनाएं एवं चुनौतियों के लिए विभिन्न सरकारी प्रयास एवं समस्याओं का समाधान करना।
- म.प्र. के धार जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है।

शोधविधि

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक समंक का प्रयोग किया गया है। तत्पश्चात इनका अध्ययन करके विश्लेषण द्वारा निष्कर्ष निकाला गया है।

- **प्राथमिक समंक** – प्राथमिक समंक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष व्यक्तियों से, अनुसूची, प्रश्नावली एवं साक्षात्कार द्वारा समंक प्राप्त किये गये हैं।
- **द्वितीयक समंक** – द्वितीयक समंक प्रकाशित व अप्रकाशित सामग्री, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, जनरल, वेबसाइटों एवं जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र, जिला योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय द्वारा समंक प्राप्त किये गये हैं।
- **कृषि आधारित उद्योग** – कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। म.प्र. का धार जिला कृषि प्रधान क्षेत्र है। धार जिले में सिंचाई नहर, नलकूपों, कुएं, तालाब एवं माही, नर्मदा, चंबल नदी से की जाती है। खरीफ फसल वर्षा पर निर्भर है। जिले में प्रमुख फसल जैसे गेहूँ, ज्वार, मक्का है और दाल की फसल चना, तुअर, उड़द, मूंग, मसूर है। इसके अलावा तिल, मूंगफली, सोयाबीन, कपास एवं सब्जी आदि फसल अच्छी मात्रा में होती है। जिससे मध्यप्रदेश के धार जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों का विकास हुआ है। इसके अंतर्गत जिले में लिन्ट, कॉटन, फ्लोर मिल, सोयाबीन डीओसी आईल, कार्नफ्लोर, आटा, मेंदा, रवा, सूजी, मक्का आटा आदि की इकाइयां संचालित हैं।

विषय विश्लेषण

- **धार जिले का औद्योगिक परिदृश्य**

म.प्र. कृषि आधारित उद्योग कृषि उपज से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध रखते हैं। धार जिला कृषि प्रधान है जिसमें निवासरत लोग कृषि पर निर्भर रहते हैं। औद्योगिक विकास की दृष्टि से धार जिले में कृषि आधारित इकाइयों का विकास प्रमुखता से हुआ है।

तालिका 1: धार जिले में उद्योगों का वर्गीकरण (31 मार्च की स्थिति में)

क्र.	वर्ष	सूक्ष्म उद्योग			लघु उद्योग			मध्यम उद्योग			वृहद उद्योग			कुल उद्योग		
		संख्या	नियोजित व्यक्ति	नियोजन लाख रूपये में	संख्या	नियोजित व्यक्ति	नियोजन लाख रूपये में	संख्या	नियोजित व्यक्ति	नियोजन लाख रूपये में	संख्या	नियोजित व्यक्ति	नियोजन लाख रूपये में	संख्या	नियोजित व्यक्ति	नियोजन लाख रूपये में
1	2017	421	1564	4270	21	210	860	00	00	00	00	00	00	442	1774	5130
2	2018	2033	3887	8404	448	7479	20980	08	959	6523				2489	12325	35707
3	2019	1381	5743	10614	2035	14493	38674	19	1541	14715				3435	21777	64003
4	2020	1402	6212	11212	2129	16253	39676	17	1473	16814	00	00	00	3548	23938	67702

स्त्रोत – जिला सांख्यिकी पुस्तिका धार

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि धार जिले में उद्योगों का वर्गीकरण वर्ष 2017 से वर्ष 2020 तक (31 मार्च की स्थिति में) बनाई गयी है। जिसमें सूक्ष्म उद्योग, लघु उद्योग, मध्यम उद्योग, वृहद उद्योग की इकाइयां शामिल हैं। शोधपत्र के अनुसार इस तालिका में लघु उद्योग की सर्वाधिक इकाइयों की संख्या 2129 है जो वर्ष 2020 की स्थिति में है। इस वर्ष में नियोजित व्यक्तियों की संख्या 16253 है और नियोजन 39676 लाख रूपये में है। जो सर्वाधिक है।

इस प्रकार मध्यम उद्योग की सर्वाधिक इकाइयां 19 हैं जो वर्ष 2019 की स्थिति में हैं। इस वर्ष में सर्वाधिक नियोजित व्यक्तियों की संख्या 1541 है और वर्ष 2020 की स्थिति में सर्वाधिक नियोजन 16814 लाख रूपये है।

अतः इस तालिका से यह स्पष्ट होता है कि धार जिले में उक्त लघु एवं मध्यम उद्योगों की इकाइयों की संख्या में से जिले के कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों की इकाइयां शामिल हैं।

तालिका 2: धार जिले में प्रमुख फसलों का उत्पादन मीट्रिक टन में (30 जून की स्थिति में)

क्र.	फसल का नाम	वर्ष			
		2017	2018	2019	2020
1.	गेहूँ	44598	900724.2	1203972.104	1095067.29
2.	मक्का	8464	287352	229812	218362
3.	चना	30537	238695	415571	134076
4.	तुअर	203	14182	11955	6599.1
5.	मूंगफली	36	5064	6523.2	5749.5
6.	सोयाबीन	43652	432173	318370	268002
7.	कपास	57800	272303	150350	202521

स्त्रोत – जिला सांख्यिकी पुस्तिका धार

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि गेहूँ की फसल का उत्पादन वर्ष 2019 में 1203972.104 मीट्रिक टन रहा जो सर्वाधिक है। मक्का का उत्पादन वर्ष 2018 में सर्वाधिक रहा जो 287352 मीट्रिक टन है। चना का उत्पादन वर्ष 2019 में सर्वाधिक रहा जो 415571 मीट्रिक टन है। तुअर का उत्पादन वर्ष 2018 में 14182 मीट्रिक टन हुआ जो सर्वाधिक है। मूंगफली का उत्पादन वर्ष 2019 में 6523.2 मीट्रिक टन रहा जो सर्वाधिक है। सोयाबीन का उत्पादन वर्ष 2018 में 432173 मीट्रिक टन हुआ जो सर्वाधिक है। कपास का उत्पादन वर्ष 2018 में सर्वाधिक रहा जो 272303 मीट्रिक टन है। इन फसलों से जिले के कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों को कच्चा माल प्राप्त हुआ जिससे उद्योगों के विकास में मदद मिली। इन फसलों के अतिरिक्त जिले में ज्वार, उड़द, मूंग, सरसों, गन्ना आदि की फसलों का भी कृषि आाधारित उद्योगों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

भारत में कृषि एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। जिसमें सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 17: भाग है। इससे लगभग 60: लोगों को रोजगार मिलता है। धार जिले की अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि पर निर्भर है। वर्ष 2019–20 में जिले में सकल घरेलू उत्पाद वर्तमान मूल्य पर 27,72,497 लाख रूपये और वर्ष 2011–12 में जो 17,01,579 लाख रूपये था। वर्ष 2019–20 की अवधि के दौरान जिले में शुद्ध घरेलू उत्पादन वर्तमान में 25,22,062 लाख रूपये और वर्ष 2011–12 में स्थिर मूल्यों पर 15,01,525 लाख रूपये थी। वर्ष 2019–20 के दौरान फैक्टर कॉस्ट पर प्रति व्यक्ति आय या छक्क्च वर्ष 2019–20 में वर्तमान मूल्य पर 1,01,088 लाख रूपये और वर्ष 2011–12 में 60,183 लाख रूपये थी।

संभावनाएं

- जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों की स्थापना पिछड़े क्षेत्र में करने की संभावनाएं हैं।
- जिले के इन उद्योगों में कृषि और उद्योग के बीच संतुलित विकास को प्रोत्साहित करना।
- जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों की संख्या में वृद्धि करें।
- इन उद्योगों में उद्यमियों को संभावनाओं के बारे में जानने की प्रचारात्मक गतिविधि को सक्रिय होना चाहिए।
- जिले में कृषि उत्पाद के निर्यात की संभावनाएं हैं।
- इन उद्योगों के विकास में सरकार की नयी नीति व प्रयास पर पहल करने की संभावनाएं हैं।
- औद्योगिक संबंध के अंतर्गत होने वाले कारणों पर सरकार को सुधारात्मक प्रयास करना चाहिए।
- जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों में अधिक उत्पादन के लिए आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जाना चाहिए।

समस्याएं एवं चुनौतियां

- जिले का अधिकांश भाग समतल नहीं है कुछ भाग में ऊबड़–खाबड़ भूमि व छोटी पहाड़ियों से घिरा है और कुछ भाग पर कृषक छोटे–छोटे जोतों पर कृषि करते हैं जिससे औद्योगिक विकास संभव नहीं है।
- जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों पर जलवायु संबंधी समस्या का विपरीत प्रभाव पड़ता है। क्योंकि वर्षा निश्चित समय में नहीं होना, वैश्विक तापमान का बढ़ना एवं मौसम का समय–समय पर परिवर्तन होना। ऐसी स्थिति में जिले में कृषि उत्पादन का अभाव होता है।
- जिले में उद्योगों को समय पर कच्चा माल उपलब्ध न होना जिससे उद्योग विकसित नहीं हो पाता है।
- जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों को पूंजी के अभाव की समस्या का सामना करना पड़ रहा है।
- जिले में कुशल प्रबंधकों व तकनीकी एवं प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी है। अतः इन उद्योगों में बाहर से कुशल प्रबंधक, प्रशिक्षित एवं तकनीकी व्यक्ति को बुलाना पड़ता है।
- जिले में सीमित बाजार क्षेत्र है। क्योंकि यहां के निवासरत अधिकांश व्यक्ति गरीबी रेखा की श्रेणी में हैं उनका जीवन स्तर निम्न है। इसलिए औद्योगिक उत्पा्दों की मांग कम है।
- इन उद्योगों में विपणन की समस्या् बनी रहती है। ग्राहक तक माल न पहुंचा पाते हैं, न विक्रय कर पाते हैं।
- जिले में बड़े उद्योगों की तुलना में इन उद्योगों की प्रतिस्पर्धा कम होती है।
- इन उद्योगों में प्रयुक्त होने वाली मशीनों तथा औजारों का अभाव है।
- इन उद्योगों में आवश्यक सुविधाएं जैसे बिजली, पानी, परिवहन आदि का अभाव है।

सुझाव

- जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों को ऋण या वित्त की सुविधाएं आसानी से कम ब्याज दर पर दी जानी चाहिए। जिससे बड़ी इकाइयों से प्रतिस्पर्धा कर सकें।
- इन उद्योगों की स्थापना एवं संचालन हेतु प्रोत्साहन योजनाओं का जन–जन तक प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए।
- इन उद्योगों के कर्मचारियों को तकनीकी ज्ञान का प्रशिक्षण कराया जाना चाहिए।
- इन उद्योगों की सामग्री की गुणवत्ता के लिए तैयार मानकों का कड़ाई से पालन करवाना चाहिए।
- इन उद्योगों की आधारभूत सुविधाएं जैसे बिजली, पानी, परिवहन आदि उपलब्ध कराना चाहिए।
- इन उद्योगों का विकास करने के लिए सरकार को पूरा प्रयास करना चाहिए।
- इन उद्योगों की वस्तुओं की मांग में वृद्धि करने के लिए नवीनतम डिजाइन तथा उच्च किस्म की वस्तुएं बनाई जाएं।
- ये उद्योग बड़ी इकाइयों से क्रय किया गया माल का भुगतान करते हैं तो ये सरकार के विलम्ब भुगतान अधिनियम के तहत निर्धारित दिन में भुगतान कर सकते हैं।
- इन उद्योगों में आधुनिक तकनीक का प्रयोग करके उत्पादन लागत को कम किया जा सकता है।

निष्कर्ष

म.प्र. के धार जिले में कृषि आधारित उद्योगों का विकास प्राचीन काल से रहा। धार जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों की स्थापना प्रायः दूसरी पंचवर्षीय योजना काल में हुई। पंचवर्षीय योजना काल में कृषि उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हुई। जिससे इन उद्योगों की संख्या में भी वृद्धि देखने को मिली। ये उद्योग कृ

षि पर निर्भर होते हैं। अतः पिछले कुछ वर्षों में कृषि उत्पादन अच्छा होने का कारण औसतन वर्षा रही है। जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों से हजारों लोगों को रोजगार मिला जिससे इन उद्योगों का विकास भी हुआ। साथ ही कार्यरत कर्मचारियों की आर्थिक स्थिति में सुधार भी हुआ। म.प्र. के धार जिले में कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों के विकास में सरकार की नीतियां, योजना एवं अनेक प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जो इन उद्योगों की समस्याओं के समाधान करने में अहम स्थान रखते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. ऋतु तिवारी, (2021), भारतीय अर्थशास्त्र, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल (138–147)
2. डॉ. एस.के. पाण्डेय, (1996), लघु उद्योगों का अर्थशास्त्र, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली
3. डॉ. अरविन्द पाल सिंह, (1973), भारतीय अर्थशास्त्र, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल (310–333)
4. वी.सी. सिन्हा, (2009), औद्योगिक अर्थव्यवस्था, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद (752–765)
5. प्रो. (डॉ.) पी.के. जैन, (2024), उद्यमिता विकास, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल (139–165)
6. जिला सांख्यिकी पुस्तिका धार म.प्र.
7. निर्देशक डॉ. राकेश ढण्ड एवं प्रस्तुतकर्ता देवेन्द्र कुमार शर्मा, (2002), ''नीमच जिले में कृषि आधारित उद्योगों की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' शोध केन्द्र महाविद्यालय, उज्जैन म.प्र.
8. डॉ. आर.एन. शर्मा एवं दिनेश कुमार साहू, (2021), जालोर जिले में कृषि आधारित उद्योगों की समस्याएं एवं समाधान, International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS) ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(IV), April-June, 2021, pp- 195-198
9. सुषमा चौधरी, (2023), जबलपुर जिले के कृषि आधारित उद्योग की समस्यायें एवं सम्भावनाओं का अध्ययन, International Journal of Reviews and Research in Social Science. 2023; 11(1):37-2. doi: 10.52711/2454-2687.2023.00006
10. डॉ. अखिलेश कुमार, (2020), ''भारत में सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योगों की वर्तमान स्थिति व चुनौतियों का एक अध्ययन'' IJCRT Volume - Issue 9 September 2020
11. आशीष नारायण शर्मा, (2016), ''नवीन शोध संसार'', ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793 Impact Factor 4-710
12. https://testbook.com
13. https://dhar.nic.in
14. https://www.indiastatedistricts.com
15. https://www.ijnrd.org.papers

❖◆❖